Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मेवाड़ के आवासीय दुर्ग का स्थापत्य और क्रमिक विकास

खुशबू गायरी*

* छात्रा (इतिहास) मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – राजस्थान का गौरव ऐतिहासिक चित्तौड़गढ़ का दुर्ग जो कि मौरी जाति के शासक चित्रांग मौर्य द्वारा सर्वप्रथम इसकी नीव रखी गई।जो अपने सामरिक महत्व के कारण समय पर विभिन्न शासकों के अधीन रहने के बाद भी अडिग रहा है।उक्त लेख में इस दुर्ग के क्रमिक विकास व स्थापत्य पर प्रकाश डाला गया है।स्थापत्य की दृष्टि से ऐसा दुर्ग है जहां पर पानी की कमी अकाल पड़ने पर भी नहीं होती है तथा किले के अंदर ही खेती की जा सकने के कारण खाद्यान्न का अभाव विकट युद्ध के समय भी संभव नहीं था। अत: इस दुर्ग में लंबे समय तक युद्ध में गिरे रहने पर भी अपने खाद्यान्न व जल की आपूर्ति दुर्ग के अंदर से ही की जा सकती थी।इसी सामरिक महत्व के कारण यह दुर्ग अनेक बार शत्रुओं के युद्ध का शिकार हुआ व अपने वीर पुत्रो व वीरांगनाओं के प्राणों की आहुति दी है, जिनकी वीरता, पराक्रम,साहस व शौर्य की कहानी आज भी यहां पर बने स्मारक बता रहे है।

शब्द कुंजी – महत्व, स्थापत्य, विकास।

प्रस्तावना – एशिया के सबसे बड़े दुर्ग के रूप में प्रसिद्ध दुर्गों का सिरमौर, तीर्थस्थल की रेणुका चितौड़गढ़ का दुर्ग समुद्र तट से 1850 फूट की ऊंचाई लगभग तीन मील लंबा और आधा मील चौड़ा मैसा के पठार पर स्थित है। जो चारो ओर मैदान से घिरी हुई पहाड़ी है जिस पर यह किला स्थित है।आसपास के मैदान से इसकी ऊंचाई 500 फूट है।मछली की आकृती में बना यह दुर्ग बेड़च व गंभीरी नदी के किनारे स्थित है।इस दुर्ग में धांवन दुर्ग को छोड़कर अन्य सभी विशेषताएं पाई जाती हैं। सर्पिलाकर मार्ग पर दिल्ली से मालवा गुजरात मार्ग पर यह दुर्ग स्थित है। यह दुर्ग अपने पराक्रम,वीरतापूर्ण गाथाओं और जौहर के किस्सों के साथ अपने स्थापत्य के लिए भी जाना जाता है जहां पर महल, मंदिर, बस्ती आदि के खंडहर है।

मौरी/मौर्य शासक – दंत कथा के अनुसार यह किला महाभारत काल में भी विद्यमान था यहां बना हुआ पानी का कुंड भीमलत कुंड के नाम से विख्यात है जिसे पांडव भीम से जोड़ कर बताया गया।परन्तु कर्नल जेम्स टॉड की पुस्तक में उद्धत वि.स.770 के शिलालेख के अनुसार यह प्रमाणित होता है की मौरि जाति के शासक भीम से 'भीमलत' कुंड के निर्माण से जोड़ना अधिक सही प्रतीत होता है। स्रोत: राजस्थान का इतिहास – गोपीनाथ शर्मा पृ. सं. 449

कर्नल टॉड की पुस्तक में उद्धत शिलालेख में मौर्य शासकों की वंशावली के अनुसार भीम का उत्तराधिकारी चित्रांगद, मौर्य था। चित्तौड़ का किला मौर्य जाति के राजा चित्रांग ने बनवाया व अपने नाम पर इसका नाम चित्रकूट रखा था,चित्तौड़ उसी का अपभ्रंश रूप है। स्रोत: वीरविनोद –श्यामलदास पृ. सं. 82

गोपीनाथ शर्मा के अनुसार 'चित्रांग ने एक तालाब भी बनवाया जो की चित्रांगमोरी नाम से जाना जाता है।'

कुकडेश्वर शिलालेख विक्रम संवत 811 में यह प्रमाणित होता है कि यहां पर कुकड़ेश्वर मौर्य नामक मौर्य शासक का शासन भी रहा था। किले के पश्चिम में कुकड़ेश्वर महादेव का मंदिर का बना हुआ है।

स्रोत – विकिपीडिया

बापा रावल – विक्रम संवत आठवीं शताब्दी के अंत में मेवाड़ के गुहिल वंशी राजा बापा (कालभोज) ने राजपूताने पर राज्य करने वाले मौर्य वंश के अंतिम राजा मान से यह किला हस्तगत किया। इसी अवसर पर बापा रावल की उपाधि धारण की। नागदा में इनका देहांत हुआ। स्रोत: उदयपुर राज्य का इतिहास– गौरी शंकर हीराचंद ओझा पृ. सं. 45, राजस्थान के राजवंशों का इतिहास –रोहित कुमार तंवर पृ. सं. 87

प्रतिहरों ने मौर्य से चित्तौड़ ले लिया हो और देवपाल प्रतिहार को प्राप्त कर अल्लट उसका अधिकारी हुआ और मालवा में परमार मुंज ने गुहिलों को पराजित कर अपने राज्य में मिला लिया। विक्रम संवत 12वीं सदी के अंत में गुजरात के सोलंकी राजा सिद्धराज ने परमारो से मालवा छीना तब यह दुर्ग भी सोलंकिया के अधिकार में चला गया।डॉ. दशरथ शर्मा जैत्र सिंह को मेवाड़ का प्रथम विजेता मानते हैं। स्रोत: राजस्थान का इतिहास– गोपीनाथ शर्मा पृ. सं. 450, कुमारपाल का शिलालेख

अलाउद्दीन खिलजी – अलाउद्दीन खिलजी द्वारा 1303 में चित्तौड़ विजय के बाद यह दुर्ग अपने पुत्र खिज्र खां को सौंपा जिसने चित्तौड़ के भग्नावशेषों पर गंभीरी नदी को पार करने के लिए पुल का निर्माण करवाया । आज भी

इसमें अनेक मूर्तियां और मंदिरों के पाषाण स्तंभ खंड और प्रशस्तियों के टुकडे देखे जा सकते हैं। नदी का जल बहाने के लिए इस पुल पर 10 मेहराब बने हैं, जिसमें से 9 के ऊपर के सिरे नुकीले और नदी के पश्चिम तट से छठे के अग्रभाग अर्द्ध वृताकार है। इस पुल के दसवीं मेहराब में समर सिंह के समय के लेख है जिसका आशय है कि रावल समर सिंह ने अपनी माता जयतली देवी के श्रेय के निर्मित पौधेशाला के लिए भूमि दी। स्रोत: उदयपुर राज्य का इतिहास- गौरी शंकर हीराचंद ओझा पृ. सं. 46, राजस्थान का इतिहास- गोपीनाथ शर्मा पृ. सं. 450- 51 व समद्धीश्वर लेख 1428

महाराणा मोकल –मेवाड़ के सिसोदिया वंश के शासक महाराणा मोकल ने भी चित्तौड़ दुर्ग के निर्माण में अपना योगदान देने में पीछे नहीं रहे। मोकल के द्वारा चित्तौड़ के प्रसादो के निर्माण,सुवर्ण तुलादान, द्वारकाधीश का मंदिर आदि बनाने में योगदान है। मोकल ने समाधिश्वर महादेव का मंदिर विक्रम संवत 1485 में बनवाया। मालवा के शासक भोज द्वारा निर्मित त्रिभुवननारायण का मंदिर का जीर्णोद्धार 1428 में मुगल द्वारा कराया गया मूर्तिकला और जनजीवन की 13वीं सदी की झांकी के लिए यह मंदिर अद्वितीय है। स्रोत: समाधिश्वर शिलालेख, राजस्थान का इतिहास- गोपीनाथ शर्मा पृ. सं. 452 व वीरविनोद- श्यामलदास पृ. सं. 83

महाराणा कुम्भा –मेवाड़ के महान शासक महाराणा कुंभा का स्थापत्य में योगदान अविस्मरणीय है कुम्भा का काल स्थापत्य युग का स्वर्ण काल के नाम से जाना जाता है। महाराणा कुंभा को चित्तौड़ दुर्ग का आधुनिक निर्माता कहा जाता है।कुंभा ने चित्तौड़ के अधिकांश वर्तमान भाग का निर्माण करवाया है। कुंभा ने मेवाड़ के 84 में से 32 दुर्गों का निर्माण अकेले कुंभा ने करवाया है।

विजय स्तम्भ – विजय स्मारक के रूप में विख्यात विजय स्तंभ का निर्माण कुम्भा ने मालवा के शासक पर विजय की स्मृति में करवाया था। यह स्तंभ भारतीय मूर्ति कला का विश्वकोष, हिंदू देवी देवताओं का अजायबघर और विष्णु स्तंभ भी कहा जाता है। यह राजस्थान पुलिस और राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के प्रतीक रूप में शामिल है।

मुद्रा शास्त्री अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वान प्रोफेसर एस.के.भट्ट ने स्तंभ की 9 मंजिलों का सचित्र उल्लेख करते हुए कहा की 'राजनीतिक विजय के प्रतीक स्तंभ के रूप में मीनारे बनाई जाती है जबकि यहां प्रत्येक तल में धर्म और संस्कृति के भिन्न-भिन्न आयामों को प्रस्तुत करने के लिए भिन्न-भिन्न स्थापत्य शैलियों अपने जाती है।'

कीर्ति स्तंभ – चित्तौड़ का कीर्ति स्तंभ तो संसार के अद्वितीय कृतियों में से एक है। इसका एक एक पत्थर पर उनके शिल्पानुराग वैदुष्य और व्यक्तित्व की छाप है ।कीर्ति स्तंभ और महलों के पूर्वी सीमा पर कुंभ स्वामी मंदिर बनवाया।

कुंभा ने रामपोल, जौड़न पोल,गणेश पोल,हनुमान पोल यह चार नए दरवाजा का निर्माण करवाया। स्रोत: राजस्थान का इतिहास- गोपीनाथ शर्मा पृ. सं. 452- 53, वीरविनोद- श्यामलदास पृ. सं. 82,'राजस्थान का गौरव है चित्तौड़ दुर्ग' दैनिक जागरण मूल से 6 फरवरी 2017 को पूरालिखित व कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति

महाराणा रायमल – मेवाड़ के महाराणा रायमल के समय गोमुख नामक झरना व हौज की सीढ़ियो से उतरते समय दाहिनी तरफ गुफा के रूप में एक छोटी सी मठी का निर्माण जैनियों द्वारा कराया गया। अद्भुत जी का मंदिर भी महाराणा रायमल के समय बना। स्रोत: वीरविनोद – श्यामलदास पृ. सं. 83, व उदयपुर राज्य का इतिहास – गौरी शंकर हीराचंद ओझा पृ. सं. 48

महाराणा उदय सिंह द्वितीय –मेवाड़ के महाराणा उदय सिंह की महारानी झाली द्वारा एक बावड़ी का निर्माण करवाया गया जिसे 'झालीबाब' नाम से जाना जाता है। स्रोत: वीरविनोद- श्यामलदास पृ. सं. 84

महाराणा जगत सिंह प्रथम – 1615 में जहांगीर के साथ हुई संधि में निश्चित हुआ था कि चित्तौड़ की मरम्मत नहीं करवाई जाएगी। परंतु 50 वर्ष पश्चात जगत सिंह प्रथम द्वारा चित्तौड़ मरम्मत कार्य आरंभ कर दिया गया। जिसे शाहजहां ने सेना भेजकर रुकवा दिया। स्रोत: राजस्थान के राजवंशों का इतिहास –रोहित कुमार तंवर पृ. सं. 94

महाराणा सज्जन सिंह – महाराणा सज्जन सिंह ने पद्मिनी महल और तालाब का जीर्णोद्धार करवाया। भैरव पोल को महाराणा ने सड़क की मरम्मत करवाते समय गिरवा दिया क्योंकि वह पहले से ही क्षतिग्रस्त होकर गिर गया था बस दोनों तरफ की शाखाएं बची हुई थी जो रास्ता चौड़ा करने के लिए गिरा दिए गए थे। कुंभा के पुराने राजमहलों के भग्नावशेषों के जिर्णोद्धार का कार्य आरम्भ किया गया। स्रोत:उदयपुर राज्य का इतिहास –गौरी शंकर हीराचंद ओझा पृ. सं. 52, वीरविनोद –श्यामलदास पृ. सं. 82

महाराणा फतेह सिंह – मेवाड़ के महाराणा फतेह सिंह ने जो कार्य सज्जन सिंह से अधूरा रह गया उसे पूरा करवाया। चित्तौड़ के जैन कीर्ति स्तंभ की मरम्मत कार्रवाई चित्तौड़ दुर्ग में नए महल बनवाए । चित्तौड़ में फतेह प्रकाश महल का निर्माण करवाया जो कि अंग्रेज रेजिडेंट के गेस्ट हाउस के रूप में उपयोग किया जाता था। स्रोत:उदयपुर राज्य का इतिहास –गौरी शंकर हीराचंद ओझा पृ. सं. संख्या 759

स्थापत्य–'गढ़ तो चित्तौड़ बाकी सब गढ़या' अनिरूद्ध की की कहावत चित्तौड़गढ़ के दुर्ग पर सटीक तरीके से उतरती है।यह दुर्ग 700 एकड़ में फैला हुआ राजपूत शैली का नमूना माना जाता है।

पाइनपोल – रेलवे स्टेशन से किले की तरफ बढ़ने पर खिज़ खा द्वारा निर्मित पुल मिलता है जिससे आगे बढ़ने पर दुर्ग का प्रथम द्वार पाडनपोल के बाहर की ओर चबूतरा बना हुआ है।

भैरवपोल – पाडनपोल के बाद भैरव पोल आती है जहां पर दो महान वीर योद्धा जयमल और कल्ला राठौड़ की छतरियां बनी हुई है। इसके पश्चात् गणेश पोल,लक्ष्मण पोल और जोड़ना पोल आती है जो इतनी सुदृढ़ दीवारों से निर्मित है कि बिना फाटक तोड़े किले पर अधिकार करना संभव नहीं है।जोड़ना पोल के सकरे मोर्चे पर शत्रु सेना आसानी से रोकी जा सकती है। यहां की ऊंचाई घुमाव और सकरापन मध्ययुगीन सैनिक सुरक्षा के लिए खास साधन था। इसके बाद रामपोल पश्चिम प्रवेश द्वार से समतल स्थिति आती है जहां पर वीर पत्ता कि स्मारक बनी हुई है। स्रोत: राजस्थान का इतिहास –गोपीनाथ शर्मा पृ. सं. 451,वीरविनोद- श्यामलदास पृ. सं. 82

कुंभा महल – त्रिपोलिया द्वार से विभिन्न दर्शनीय स्मारक दिखाई पड़ते हैं, जैसे- पुराने राजमहल, निजी सेवा का बाण माता मंदिर, कुंभा का जनाना और मर्दाना महल, कोठार, शिलालेख, राजकुमारों के प्रसाद आदि प्रमुख हैं जिन्हें कुंभा महल के नाम से जाना जाता है। कुंभा महल में बनी सुरंग को पद्मिनी का जौहर स्थान बताया जाता है। कुंभा महल के नीचे के महलों का कुछ भाग कुछ कुंभा के समय से पहले के बने हुए थे ।जिसके खंडहर अब सफाई व खुदाई से निकल आए हैं। जिससे यह अंदाजा लगाया जाता है कि कुंभा ने इन्हीं पुराने महलों पर ही नए महल बनवा दिए हो जहां छोटे-छोटे

शिवालय व चबूतरे मिलते हैं जो जौहर होने के स्थान के प्रमाण देते हैं जहां हुई खुदाई इसको और स्पष्ट करती है। चित्तौड़ का राजभवन भी तत्कालीन समय के उच्च वर्गीय समाज के लोगों के जीवन पर प्रकाश डालता है।

कीर्ति स्तंभ – 9 मंजिला कीर्ति स्तंभ अपने आप में अद्धितीय है। कुंभा द्धारा निर्मित इस स्तंभ को आरंभ में 'भाक्षी' नामक स्थान पर रखा गया।इस स्तंभ की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि प्रत्येक मूर्ति पर नामांकन दिया गया है मूर्ति के अस्त्र–शस्त्र या मूर्ति पर अन्य चिन्ह से समझने में आसानी होती है। सबसे ऊपरी मंजिल पर चार शिलालेख की ताके पाई गई है।जिनमे दो शिलाएं प्राप्त है। इसी स्तंभ पर बनी मूर्तियों से सामाजिक जीवन पर प्रकाश डाला जा सकता है, यह निर्माण कार्य जैता सूत्रधार के द्धारा किया गया है।

कीर्ति स्तंभ से आगे सामंतों के आवास व उनकी भौतिक सुविधाओं पर झांकी डालती जयमल की हवेली स्थित है। इससे आगे पद्मिनी के महल आते हैं जो नए बन गए हैं फिर भी कुछ खंडहरों के अवशेष तत्कालीन समय के स्थापत्य के साक्षी बने हुए हैं। यहां जैन कीर्ति स्तंभ भी बना हुआ है जो कि जीजा द्धारा निर्मित करवाया गया था। स्रोत: राजस्थान का इतिहास– गोपीनाथ शर्मा पृ. सं. 451– 52,चित्तौड़ का आर्कियोलॉजिकल सर्वे 2007

दुर्ग के जलाशय – जलाशय की दृष्टि से भी यह दुर्ग अपना महत्व बनाए हुए है यहां 84 जलाशय बने हुए है जिनमे से जिनमें से 12 वर्ष भर भर रहते हैं। जैसे – पद्मिनी तालाब इसका जीर्णोद्धार महाराणा सज्जन सिंह के द्धारा करवाया गया था।रत्नेश्वर तालाब दुर्ग के उत्तर की ओर स्थित है इसके ऊपरी ओर हिंगोला आडा का महल विद्यमान है। राठौड़िया तालाब हंगोला आडा के महल के पीछे की ओर स्थित है। कुंभासागर तालाब कुकडेश्वर महादेव के मंदिर के दक्षिण में 'भीमगोड़ी' नाम से गहरा जलाशय और कुंभासागर तालाब स्थित है।'झालीबाब' पाडन पोल के बाहरी ओर बनी हुई है। इसके अतिरिक्त दो अन्य कुंड है जिनका निर्माण अज्ञात है परंतु मरम्मत का कार्य मेहता शेर सिंह के पुत्र सवाई सिंह के द्धारा करवाया गया आदि प्रमुख है। स्रोत: वीरविनोद– श्यामलदास पृ. सं. 83–84

अन्य स्थापत्य

लखोटा बारी – यह उत्तर की ओर बनी हुई है।कस्बा पश्चिम की ओर बना हुआ है जिसे तलहटी बोला जाता है। कस्बे में अस्पताल और पाठशाला यह दोनों नए बनवाए गए हैं। कस्बा शहरपनाह (परकोटा) से गिरा हुआ है। 1881 ईस्वी में कस्बे में रेलवे लाइन खोली गई। किले के उत्तरी ओर नगरी नामक गांव है जहां से प्राचीन मकान के अवशेष व सिक्कों की प्राप्ति हुई है इसके पश्चिम तरफ शहरपनाह के भग्नावशेष के चिन्ह है।उभ दिवत नामक एक मीनार बनी हुई है जो बौद्धो द्धारा निर्मित प्राचीन ज्ञात होती है। नवलख भंडार बनवीर द्धारा ऊंची ऊंची दीवार बनवाई गई जिसके पास में सुरक्षित स्थान नवलख भंडार स्थित है। स्रोत: वीर विनोद श्यामल दास पृ. सं. 84

दुर्ग का मंदिर स्थापत्य – मंदिर स्थापत्य की दृष्टि से भी यह दुर्ग अपना महत्व बनाए हुए है यहां पर हिंदू ,जैन और बौद्ध सभी धर्मो के मंदिरों के अवशेष विद्यमान है। चार दीवारों के भीतर बड़े–बड़े पत्थरों में बना हुआ एक स्थान है जिसे 'हाथियों का बाड़ा' कहा जाता है। परंतु यह बौद्ध लोगों का स्तूप मालूम होता है जेमल जी के तालाब तट पर बौद्धों के छह स्तूप खड़े हैं जो कि वर्तमान में तोपखाने के पास खड़े हैं । स्रोत: वीरविनोद– श्यामलदास पृ. सं. 84, उदयपुर राज्य का इतिहास –गौरी शंकर हीराचंद ओझा पृ. सं. 46

जैन मंदिर/ जिनालय– चित्तौड़ किले के अंदर 6 जैन मंदिर है इनमें सबसे बड़ा भगवान आदिनाथ का मंदिर है ।सत्बीस देवरी मंदिर 27 मंदिरों का समूह बड़ी पोल के दाहिनी ओर स्थित है ।मंदिर के अंदर एवं बाहर की नक्काशी अद्भुत है इस मंदिर के साथ दो छोटे मंदिर भी स्थित है।सात मंजिल वाला जैन कीर्ति स्तंभ जिसको दिगंबर संप्रदाय के महाजन सा नाय के पुत्र जीजा ने बनवाया था। यह कीर्ति स्तंभ आदिनाथ का स्मारक है जिसके चारों पार्श्व पर आदिनाथ की एक विशाल दिगंबर जैन मूर्ति खड़ी है और बाकी के भाग पर अनेक छोटी–छोटी जैन मूर्तियां खुदी हुई है।

महावीर स्वामी के मंदिर का जीर्णोद्धार कुंभा कालीन ओसवाल महाजन गुनराज ने करवाया था। वर्तमान में यह मंदिर जीर्ण – शिर्ण अवस्था में पड़ा हुआ है।महाराणा रायमल के समय जैनियों द्धारा जैन मढ़ी का निर्माण करवाया गया जहां पर दक्षिण से लाई गई मूर्ति स्थापित की गई।

श्रृंगार चंवरी – वास्तव में यह शांतिनाथ का जैन मंदिर है जिसकी प्रतिष्ठा खरतरगच्छ के आचार्य जिनसेन सूरी ने की थी। इसका जीर्णोद्धार महाराणा कुंभा के भंडारी वेलक ने 1448 ईस्वी में कराया था। इस मंदिर के बाहरी भाग में उत्कीर्ण कला देखने योग्य है। लोग इसको लोग भ्रम से श्रृंगार चोरी कहते हैं।स्रोत:वीरविनोद – श्यामल पृ. सं. 83, राजस्थान का इतिहास – गोपीनाथ पृ. सं. 451– 52, उदयपुर राज्य का इतिहास गौरी शंकर हीराचंद ओझा पृ. सं. 47

हिंदू मंदिर – कालिका का मंदिर पत्ता की हवेली के दक्षिण में आठवीं शताब्दी में निर्मित कालिका का मंदिर है जो पहले सूर्य मंदिर था निजमंदिर के द्धारा पर सूर्य की मूर्ति तथा गर्भग्रह के बाहरी पार्श्व के ताकों पर भी सूर्य की मूर्तियों से निश्चित होता है की संभवत: है कि मेवाड़ के गुहिल वंशीय राजाओं ने बनवाया हो। मुसलमानों के समय मूर्ति तोड़ दी गई हो बाद में किसी ने यहां कालिका की मूर्ति स्थापित कराई हो।महाराणा सज्जन सिंह द्धारा इसका जीर्णोद्धार करवाया गया।

त्रिभुवननारायण का मंदिर – मालवा के शासक भोज् द्धारा निर्मित इस मंदिर का जीर्णोद्धार मोकल के द्धारा 1428 ईस्वी में करवाया गया मूर्ति कला और जनजीवन की 13वीं सदी की झांकी के लिए यह मंदिर अपने ढंग में अद्धितीय है। समाधिश्वर महादेव मंदिर का निर्माण मोकल के द्धारा करवाया गया था। इसके भीतरी और बाहरी भाग में खुदाई का काम सुंदर बना हुआ है।

कुंभास्वामी मंदिर – महाराणा कुंभा द्धारा जीर्णोद्धार कराया गया। तथा यह मीरा हरि कीर्तन के लिए जाया करते थी।अद्भुत जी का मंदिर महाराणा रायमल के समय बना यह मंदिर जिसमें शिवलिंग और दीवार से सटी हुई शिवजी की विशाल त्रिमूर्ति है इस ही अद्भुत मूर्ति को देखकर इस मंदिर का नामकरण अद्भुत जी का मंदिर हुआ है। तुलिका भवानी का मंदिरबनवीर के द्धारा बनवाया गया।

अन्य मंदिर – (1) कुकड़ेश्वर महादेव का मंदिर, (2) नीलकंठ महादेव का मंदिर, (3) अन्नपूर्णा देवी का मंदिर, (4) जटाश्वर महादेव का मंदिर आदि प्रमुख है। स्रोत: वीरविनोद– श्यामलदास पृ. सं. 83,राजस्थान का इतिहास –गोपीनाथ शर्मा पृ. सं. 451–52 व उदयपुर राज्य का इतिहास– गौरी शंकर हीराचंद ओझा पृ. सं. 46, 47, 50

निष्कर्ष – चित्तौड़ का दुर्ग एक ऐसे दुर्ग के रूप में है जो कि सदियों से अपने पराक्रम, वीरता, जौहर और शौर्य की गाथाओं का साक्षी बना हुआ है। यहां पर महान शासको का शासन रहा है जो कि यहां पर निर्मित स्मारक इस बात के साक्षी बन रहे हैं। 'इस दुर्ग में भक्ति भी रही है और शक्ति भी रही है।'यह

ऐसा दुर्ग है जहां पर भक्त शिरोमणि मीराबाई भी रही है और यहां पर महान वीरांगनाएं भी रही है। दुर्ग का स्थापत्य अद्भुत है जहां पर समय-समय पर शासको ने निर्माण कार्य को करवाया जो कि इस दुर्ग के सामरिक महत्व को इंगित करता है। यह दुर्ग प्राचीन स्मारकों को महलों और जौहर के स्मारक चिन्हों से सुसज्जित है जो कि आज भी भारतीयों के लिए सामाङ्गिय व गर्व महसूस करवाते हैं हम राष्ट्रवासियों के लिए यह दुर्ग प्रेरणा स्रोत का काम करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. राजस्थान का इतिहास- गोपीनाथ शर्मा,
2. वीरविनोद -श्यामल दास,
3. उदयपुर राज्य का इतिहास- गौरीशंकर हीराचंद ओझा,
4. चित्तौड़ आर्कियोलॉजिकल सर्वे 2007,
5. कर्नल जेम्स टॉड की पुस्तक प्रतिलिपि में उद्धत शिलालेख,
6. समाधिश्वर का शिलालेख,
7. कुमारपाल का लेख,
8. कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति,
9. कुकड़ेश्वर शिलालेख,
10. 'राजस्थान का गौरव है चित्तौड़ दुर्ग' दैनिक जागरण मूल से 6 फरवरी 2017 में पूरालिखित

****